॥ प्रिये पहा ॥

गायकः कुमार गंधर्व
गीतः अण्णासाहेब किर्लोस्कर
नाटकः सं. सौभद्र

प्रिये पहा
रात्रीचा समय सरूनि, येत उषःकाल हा ॥ धृ. ॥
थंडगार वात सुटत।
दीप तेज मंद होत।
दिग्व्दनें स्वच्छ करित।
अरुण पसरि निज महा ॥ १ ॥

पक्षि मधुर शब्द करिति।
गुंजारव मधुप वरिति।
विरलपर्ण शाखि होति।
विकसन ये जलरुहा ॥ २ ॥

सुखःदुखा विसरुनियां।
गेले जें विश्व लया।
स्थिति निज ती सेवाया।
उठले की तेंच अहा ॥ ३ ॥